315hi32A

32

औपनिवेशिक राज्य

जब ब्रिटेन ने भारत की प्रभुसत्ता यानी सर्वोच्च शक्ति अपने हाथ में ली, तो शाही–औपनिवेशिक संबंध इस आधार पर स्थापित होने लगे थे। भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना स्थानीय भारतीय शासकों की अपनी सत्ता पर नियंत्रण रखने में अक्षमता या पिछड़ेपन के कारण हुई थी। औपनिवेशिक राज्य का राजनीतिक अधिकार अपनी सत्ता बनाए रखने और लागू करने के अनेक उपकरणों से प्राप्त हुआ, जो औपनिवेशिक नीति के निर्माण की पूर्व–शर्त थी। यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि कैसे जनता पर शासन को वैध बनाया गया और कैसे औपनिवेशिक राज्य की सत्ता जनसाधारण के लिए देखने योग्य बनाई गई।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- औपनिवेशिक राज्य का अर्थ और स्वरूप समझा सकेंगे;
- भारत में औपनिवेशिक उद्देश्यों को स्मरण कर सकेंगे;
- औपनिवेशिक नियंत्रण के तत्त्वों की पहचान कर सकेंगे; और
- औपनिवेशिक शासन के प्रतीकों और प्रभावों की खोज कर सकेंगे।

31.1 प ष्ठभूमि

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। इससे उत्पन राजनीतिक शून्यता को बंगाल, हैदराबाद, अवध, पंजाब और मराठा राज्य जैसे क्षेत्रीय राज्यों के उदय ने भरा। लेकिन ये क्षेत्रीय शक्तियां राजनीतिक स्थिरता प्रदान नहीं कर सकीं, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में क्षेत्रीय साम्राज्य स्थापित करने का अवसर मिल गया। अब भारत पर औपनिवेशिक तंत्र के जरिये शासन करने के लिए संस्थाओं और विनियमों का एक ढांचा चाहिए था।

(क) औपनिवेशिक राज्य का अर्थ

ब्रिटिशों की जीत से पूर्व क्षेत्रीय लोगों और परम सत्ता के बीच संबंधों को धर्म द्वारा कभी पूर्णतः परिभाषित नहीं किया गया। आर्थिक और सामाजिक संबंध का एक जाल शाही समन्वयन, संकट और पतन की अवधियों में बचा रहा, जिसने उपमहाद्वीप को परस्पर निर्भरता के एक सरल ढांचे में बाँधे रखा। परम सत्ताओं के अनेक स्तरों को रचनात्मक ढंग से समायोजित करने के एक लंबे इतिहास के बावजूद स्वतंत्र भारत में सत्ता में हिस्सेदारी बांटने के लिए किए गए शर्तों के पुनः बँटवारे ने 'राष्ट्र' के वैयत्तिक और साथ जुड़ते विचार पर आधारित क्षेत्रीय प्रभुसत्ता की एक कड़ी और स्थूल संकल्पना को देखा। औपनिवेशिक राज्य का अर्थ है एक विदेशी राजनीतिक सत्ता द्वारा किसी देश की प्रभुसत्ता (शासन और नियंत्रण करने के लिए कानूनी रूप से स्वतंत्र सत्ता) ग्रहण करना। औपनिवेशिक राज्य को शाही–औपनिवेशिक संबंध के विशेष संदर्भ में प्रभुसत्ता का एक सिद्धांत निरूपित करना था। ऐसा दुतरफा प्रक्रिया द्वारा किया जाता हैः 1. औपनिवेशिक राज्य को वैधता प्रदान करके अर्थात एक विदेशी सत्ता के अस्तित्व को न्यायसंगत ठहराकर, जो स्वतः दूसरी प्रक्रिया की ओर ले जाता है अर्थात 2. औपनिवेशिक–पूर्व देशी राजनीतिक सत्ता को उखाड़कर अथवा उसे अवैध ठहरा कर।

(ख) औपनिवेशिक राज्य का स्वरूप

ब्रिटिशों ने भारत में अपने औपनिवेशिक शासन को अपने विचारों के अनुसार समन्वित किया कि औपनिवेशिक राज्य कैसा हो सकता है, और कुछ आधुनिक विशेषताओं के साथ एक आधुनिक राज्य का उदय हुआ। जैसा कि एक आधुनिक राज्य में होता है, औपनिवेशिक सरकार के पास सेना का एकाधिकार, कर–वसूली के लिए एक केंद्रीक त प्रशासन, एक केंद्रीक त कानून–प्रणाली, प्रशासकों और नौकरशाहों का प्रशिक्षित कर्मचारी –वर्ग और स्पष्ट निर्धारित क्षेत्रीय सीमाएँ थीं। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों का उद्देश्य ऐसा शासन था, जो विधि पर आधारित और विनियमों के अनुसार संचालित हो। किंतु निचले स्तरों पर, जहाँ नीतियों का कार्यान्वयन हुआ, वहाँ जाति, कुल, रिश्तेदारी और संरक्षक–आश्रित संबंधों ने स्थानीय समाज को प्रभावित करने में मुख्य भूमिका निभाई। 1947 में स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद नए राष्ट्र ने औपनिवेशिक सरकार से विरासत में प्राप्त संस्थाओं पर, अपनी संपूर्ण शक्तियों और कमजोरियों के साथ अपनी सरकार गठित की।

(ग) भारत में औपनिवेशिक उद्देश्य

19वीं शताब्दी के दौरान एक ब्रिटिश राजसी या शाही विचारधारा उभरी, जिसमें विश्व के सबसे धनी और प्रगतिशील राष्ट्र के तौर पर इंग्लैंड का यह कर्त्तव्य था कि शेष विश्व को सम द्ध बनने और उन्नति करने में उसकी मदद करे। कानून सभ्य जीवन और संपदा के निर्माण की स्थितियां पैदा करता। भारत में ब्रिटिश शासकीय विचारधारा निम्नानुसार थीः

1. भारतीय खुद पर शासन करने में समर्थ नहीं हैं।
2. ब्रिटेन का कर्त्तव्य था कि वह भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में हस्तक्षेप अथवा उसका प्रबंधन करने का प्रयास किए बिना कानून पर आधारित एक अच्छी सरकार प्रदान करे।

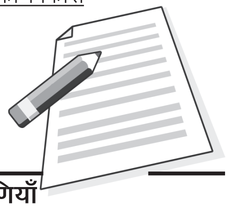

शाही सरकार की मुख्य जिम्मेदारियां निम्नानुसार देखी गईः

(क) भूमि–राजस्व की वसूली और (ख) कानूनी प्रशासन का कार्यान्वयन।

ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा की गई राजस्व–व्यवस्था के प्रकार में इस प्रचलित विचारधारा के अनुसार कि भारत में धन–संपत्ति कैसे बनाई जाए, कंपनी की सुरक्षा संबंधी जरूरतों के अनुसार और नए क्षेत्र कंपनी के नियंत्रण में आने पर प्राप्त अनुभव के अनुसार अंतर बना रहा।

औपनिवेशिक राज्य दो उद्‌देश्यों के लिए काम कर रहा था : (क) ब्रिटिश राजधानी की जरूरतों के अनुसार भारतीय उपनिवेश को पूर्णरूपेण अपने अधीन करना और (ख) ब्रिटिश राजधानी द्वारा भारतीय उपनिवेश का आर्थिक शोषण या उसके आर्थिक अधिशेष को अपने उपयोग में लाना। किंतु भारतीय उपनिवेश में शाही दिलचस्पी का स्वरूप पूरे समय एक जैसा नहीं रहा और वह मात भूमि की जरूरतों और ब्रिटेन के विभिन्न सामाजिक समूहों के हितों के अनुसार बदलता रहा। 1813 तक भारत में ब्रिटिश शासन के पहले चरण में ब्रिटेन के हित मुख्यतः (क) भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार और अन्य यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों की समाप्ति तथा (ख) कर–व्यवस्था के जरिये वित्तीय स्रोतों पर नियंत्रण में निहित थे।

ये दोनों उद्‌देश्य वर्तमान संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र को छेड़े बिना पूरे किए जा सकते थे। इस चरण में ब्रिटिश शासक परंपरागत शासकों से ज्यादा भिन्न नहीं थे और उनकी मुख्य दिलचस्पी क षि–अधिशेष को प्राप्त करने में भी। अतः इस चरण में एकसमान प्रशासनिक ढांचा निर्मित करने का या पुराने ढांचे को सुधारने तक का कोई प्रयास नहीं किया गया। न्याय–प्रणाली और प्रशासन में कोई मूलभूत बदलाव नहीं लाया गया। प्रशासन के क्षेत्र में जो मामूली परिवर्तन किए भी गए, वे केवल राजस्व–वसूली के शीर्ष पर किए गए जो बिना बाधा राजस्व–वसूली से जुड़े थे। भारत के लिए एक आधुनिक न्याय–प्रणाली और एकसमान प्रशासनिक ढांचा इस चरण में आवश्यक नहीं समझा गया, क्योंकि वह भारत में अंग्रेजी राज के पहले चरण में ब्रिटिशों के लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रासंगिक नहीं माना गया।

1813 के बाद परिद श्य काफी बदल गया था। ब्रिटिश अर्थव्यवस्था और समाज एक बड़े रूपांतरण से गुजर रहे थे, जिसका मुख्य कारण औद्योगिक क्रांति थी। वाणिज्यिक व्यापारिक निगम अब औद्योगिक स्वामित्व को रास्ता दे रहे थे जो ब्रिटिश समाज में प्रबल ताकत बन गया था। भारतीय व्यापार पर से ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिकार धीरे–धीरे खोता जा रहा था। भारत में ब्रिटिश हित अब कंपनी के हितों का प्रतिनिधित्व न करके औद्योगिक पूंजीपति वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे। ब्रिटिश उद्योगपतियों की दिलचस्पी भारत में (क) अपनी निर्मित औद्योगिक वस्तुओं के बाजार और (ख) अपने उद्योगों के लिए पटसन और कपास जैसे कच्चे माल तथा निर्यात के लिए खाद्यान्न, अफीम आदि के स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में थी।

इस सबके लिए भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में कहीं अधिक गहरी पैठ और भारत के ब्रिटेन के साथ ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के साथ होने वाले व्यापार पर भी नियंत्रण आवश्यक था। भारत से अब एक नई भूमिका निभाने की अपेक्षा की जा रही थी।

परंपरागत प्रशासनिक संस्थाओं के साथ यह नई भूमिका निभाना शायद संभव नहीं था। उन्हें नई जरूरतों के मुताबिक बदलना और रूपांतरित होना था। अतः भारतीय प्रशासन के रूपांतरण की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी प्रकार आधुनिक कानूनों की मदद से आधुनिक व्यवसाय को बढ़ावा देने, एक बाजार–अर्थव्यवस्था निर्मित करने, मुक्त वाणिज्यिक संबंध स्थापित करने और विभिन्न आर्थिक लेन–देनों को सुनियोजित करने के लिए संपूर्ण कानूनी ढांचे की कायापलट करना जरूरी था।

ब्रिटिशों के हित कई प्रकार के थे। सर्वप्रथम तो मुख्य प्रयोजन था एकाधिकारपूर्ण व्यापारिक स्थिति हासिल करना। बाद में यह महसूस किया गया कि मुक्त व्यापार की व्यवस्था भारत को ब्रिटिश वस्तुओं के लिए एक बड़ा बाजार और कच्चे माल का स्रोत बना देगी, किंतु भारत में निवेश करने वाले अथवा यहाँ बैंकिंग या शिपिंग सेवाएं बेचने वाले उद्योगपति कारगर ढंग से विशेष सुविधाओं पर नियंत्रण रखते रहे या उन पर हावी बने रहे। भारत ने ब्रिटेन के उच्च–मध्य वर्ग के एक बड़े भाग के लिए रुचिकर और लाभदायक रोजगार भी उपलब्ध कराया और उनके द्वारा घर भेजे गए धन ने ब्रिटेन के भुगतान–संतुलन और बचत की क्षमता में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। और अंत में, भारत पर नियंत्रण भूगोल, संभार–तंत्र यानी लॉजिस्टिक्स और सैनिक मानव–शक्ति की दष्टि से विश्व की सत्ता–संरचना का एक महत्त्वपूर्ण तत्व था। अंग्रेज भारत के आर्थिक विकास के खिलाफ नहीं थे अगर उससे उसके बाजारों में बढ़ोतरी होती, लेकिन अपने खुद के आर्थिक हितों या राजनीतिक सुरक्षा के साथ टकराव वाले क्षेत्रों में सहायता करने से उन्होंने इंकार कर दिया। इसलिए उन्होंने भारतीय वस्त्र उद्योग को तब तक संरक्षण प्रदान नहीं किया जब तक कि उसका मुख्य प्रतिस्पर्धी मैनचेस्टर के बजाय जापान नहीं बन गया और उन्होंने तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए भी लगभग कुछ नहीं किया। उन्होंने संपत्ति की कुछ ब्रिटिश अवधारणाएं लागू कीं, पर अपने हितों की पूर्ति हो जाने पर उन्हें बहुत आगे नहीं बढ़ाया।

पाठगत प्रश्न 32.1

रिक्त स्थान भरिए :

1. __________ शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।
2. __________ तक भारत में ब्रिटिश शासन के पहले चरण में ब्रिटेन के हित मुख्यतः भारत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार में निहित थे।
3. ब्रिटिश अर्थव्यवस्था और समाज एक बड़े रूपांतरण से गुजर रहे थे, जिसका मुख्य कारण __________ थी।
4. ब्रिटिश उद्योगपतियों की दिलचस्पी भारत को अपनी __________ वस्तुओं के बाजार के रूप में इस्तेमाल करने में थी।

चित्र 32.1 राइटर्स इमारत

32.2 वैधता के रूप

जैसा कि आप जानते हैं, ब्रिटिश राज के ठीक पहले भारत की प्रभुसत्ता मुगल वंश के पास थी। उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक ब्रिटिशों ने मुगल वंश के राजत्व के प्रतीकों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। 1835 तक फारसी राजभाषा बनी रही और सिक्कों पर मुगल सम्राटों का नाम चलता रहा। मुगल वंश को तोप की सलामी 1837 तक ही सुरक्षित रही। प्रभुसत्ता के इन प्रतीकों की वापसी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से एक प्रतीकात्मक कार्रवाई थी, जो यह सूचित करती थी कि उसने भारत की प्रभुसत्ता पर कब्जा कर लिया है। ब्रिटिशों की पहले प्रांतीय राजधानियों में और फिर चुने गए आंतरिक स्थानों में उपस्थिति का अर्थ था कि जो संस्थाएँ साम्राज्य की कुछ मामलों में प्रतीक थीं, वे इस रूप में भी निर्मित की जा सकती थीं। अतः मुंबई का टापू और हुगली डेल्टा के कुछ गांव कंपनी के बाम्बे प्रांत की और फिर भारतीय साम्राज्य की भव्य राजधानियाँ बन गए। मुगल साम्राज्य का उन्नत और परिष्क त हृदय–प्रदेश प्रांतीय क्षेत्र बन गया। केंद्र और परिधि का पुनर्लेखन एक नए वास्तुशिल्प के औजारों से किया गया। नई संस्थाओं ने नई सत्ता चिन्हनित की। भवन नई संस्थाओं के सर्वाधिक मूर्त या भौतिक, महत्त्वपूर्ण और प्रभावी रूप थे। राजधानी, जैसे कि बंबई (अब मुंबई) में ठीक वही नजर आता था जिसका उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रांतीय नगर में अभाव था।

कंपनी (जो खुद ब्रिटिश ताज की नौकर थी और अपना कामकाज शाही चार्टर के माध्यम से चलाती थी) भारतीय सम्राट को अपना अधीनस्थ बनाना चाहती थी। अधीनस्थता की शब्दावली में भारत में ब्रिटिश अनुभव से निकले 'सर्वोच्चता', 'संरक्षण', 'सहायक भत्ता', 'अप्रत्यक्ष शासन', 'सहयोग' जैसे शब्द शामिल थे। उन्नीसवीं शताब्दी के

प्रारंभ तक कंपनी और विभिन्न भारतीय राजसी प्रदेशों के बीच संधियों की एक श्ंखला के जरिये 'संरक्षण' व्यवस्था स्थापित हो गई। गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलिजेली ने एक प्रणाली तैयार की, जो सहायक संधि प्रणाली के नाम से जानी गई। इस प्रणाली में लगातार हैदराबाद (1798), मराठा पेशवा (1802), नागपुर के भोंसले और ग्वालियर के सिंधिया (1803), जयपुर (1803), बड़ौदा के गायकवाड़ (1805), त्रावणकोर (1805), कोचीन (1807), कोटा (1817), जोधपुर (1818) और बीकानेर (1828) सूचीबद्ध होते गए। प्रणाली का सार था ब्रिटिश संरक्षण का वादा, जिसके लिए देशी राज्य निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक तरीकों से भुगतान करते थे : (क) कंपनी की सेना की एक टुकड़ी के रख–रखाव की नकद लागत, (ख) राज्य के एक भाग कंपनी को सौंपा जाना, (ग) राज्य का आंशिक या पूर्ण विसैन्यीकरण यानी राज्य की सशस्त्र सेना का त्याग, (घ) कंपनी के अनुमोदन के बिना अन्य राजनीतिक शक्तियों के साथ संबंध और युद्ध पर प्रतिबंध, (च) सलाह या निर्देश देने के लिए दरबार में कंपनी के रेजिडेंट को रखने की स्वीक ति।

बल–प्रयोग अधीनता उपलब्ध होते ही राज्य के व्यवहार को समस्त अधीनस्थों के लिए दष्टिगोचर बनाया जाना आवश्यक था। औपनिवेशिक राज्य की दश्यता के लिए अपनाए गए व्यवहार 1858 में अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर पर उनके अपने महल में चलाए गए मुकदमे या 1877 के दिल्ली दरबार जैसे थे जिसमें ब्रिटिश प्रभुसत्ता के प्रति भारत की अधीनता सार्वजनिक तौर पर अधिनियमित की गई थी। आम जनता के लिए औपनिवेशिक राज्य की प्रतीकात्मक सांस्कतिक रचना राज्य की दूरस्थ एजेंसियों और रोजाना के अनुभवों के मार्फत की गई – दरोगा और पुलिस; कलक्टर की कचहरी में पटेल, अमीन, पटवारी और कानूनगो; नई अदालतों में ताकतवर लोगों के पक्ष में निर्णय लेते, काले कपड़े पहने अनजान भाषा (अंग्रेजी) बोलते अनजान आदमी; शहरों में औपनिवेशिक सत्ता को दष्टिगोचर बनाते विशाल औपनिवेशिक स्मारक; अक्सर छावनियों से बाहर आकर फ्लैगमार्च करते सैनिकों के दश्य और अंततः गोरी जाति के सदस्यों के समक्ष देशी समाज के उच्च लोगों के झुकने और नमन करने के नजारे भारतीय मानस में औपनिवेशिक शासन की छाप छोड़ने वाले कुछ प्रतीक थे।

32.3 औपनिवेशिक नियंत्रण की शुरुआत

औपनिवेशिक नियंत्रण के प्रारंभिक चरण के दौरान देशी नागरिक प्रशासन को बनाए रखा गया। बंगाल की विजय से पहले तक इस व्यवस्था ने बहुत अच्छा काम किया, लेकिन एक बड़े क्षेत्रीय साम्राज्य के पदाधिकारियों को पारिश्रमिक देने के तरीके के रूप में वह अक्षम थी, क्योंकि (क) लाभ का बहुत बड़ा हिस्सा कंपनी की तिजोरी में आने के बजाय निजी हाथों में चला जाता था, और (ख) एक अति लालची अल्पकालिक नीति अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को क्षति पहुंचा रही थी, जो स्थानीय जनता को बगावत करने के लिए प्रेरित कर सकती थी और ये दोनों बातें कंपनी के दीर्घकालिक हितों के खिलाफ थीं। क्लाइव ने एक 'दोहरी' प्रणाली चलाई थी, यानी कंपनी की सत्ता और एक कठपुतली नवाब। वारेन हेस्टिंग्स ने नवाब को हटा दिया और प्रशासन सीधे संभाल लिया, लेकिन भारतीय अधिकारियों को बनाए रखा।

32.4 उपनिवेशवाद की विश्वास की विचारधारा और सिद्धांतकार

ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन में बेंथमवादी उग्र सुधारवाद की एक प्रबल प्रव त्ति थी। भारतीय संस्थाओं के प्रति घोर अवमानना दर्शाने वाला भारत का एक विशाल इतिहास लिखने के बाद जेम्स मिल 1819 में कंपनी का एक वरिष्ठ अधिकारी बना। 1831 से 1836 तक वह ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य कार्यपालक अधिकारी यानी सीईओ था। 1823 से 1858 तक उसके बेटे ने कंपनी के लिए कार्य किया। माल्थस हेलीबरी में अर्थशास्त्र का प्रोफेसर था, जहाँ भावी कंपनी अधिकारियों की पढ़ाई उपयोगितावाद से अत्यधिक प्रभावित थी। बेंथम से भी भारतीय संस्थाओं के सुधार के संबंध में परामर्श किया गया था। उपयोगितावादियों ने उन प्रयोगों और विचारों (जैसे सिविल सेवा में प्रतियोगिता के जरिये प्रवेश) को आजमाने के लिए भारत का जानबूझकर इस्तेमाल किया, जिन्हें वे इंग्लैंड में लागू करना चाहते थे। उपयोगितावादी मुक्त अर्थव्यवस्था यानी लेसेज फेयर के प्रबल समर्थक थे और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य के किसी भी तरह के दखल से घ णा करते थे। अतः उन्होंने अकाल की समस्याओं से निपटने के लिए बाजार की ताकतों पर भरोसा किया और कृषि को बढ़ावा देने या उद्योग के संरक्षण के लिए कुछ नहीं किया। लेसेज फेयर की यह परंपरा भारतीय सिविल सेवा में खुद इंग्लैंड से ज्यादा गहराई से अंतर्निहित थी और 1920 के अंत तक बहुत प्रबलता से जारी रही। प्रशासन दक्ष था या भ्रष्ट नहीं था, किंतु राज्य–तंत्र का स्वरूप निगरानी करने वाला जैसे था, जिसमें कुछ विकासात्मक व्यय सेना, न्याय, पुलिस और जेलों पर किया जाता था और 3 प्रतिशत से कम कृषि पर। भारत के पश्चिमीकरण के लिए ब्रिटिशों द्वारा किए गए सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्यों में से एक था अंग्रेजी शिक्षा के एक संशोधित रूप का कार्यान्वयन। शिक्षा पर मैकाले के 1835 के कार्यव त्त का ब्रिटिश शिक्षा–नीति पर निर्णायक प्रभाव पड़ा, जो भारतीय सभ्यता के प्रति पश्चिमी बुद्धिवादी नजरिये का एक विशिष्ट उदाहरण है। ब्रिटिशों के सत्ता संभालने से पहले मुगल अदालतों की भाषा फारसी थी और मुस्लिम जनसंख्या उर्दू बोलती थी, जो फारसी, अरबी और संस्कृत का मिश्रण थी। उच्च शिक्षा ज्यादातर धार्मिक थी और अरबी और संस्कृत के ज्ञान पर जोर देती थी। कंपनी ने कलकत्ता के एक मदरसे को (1718 में) और बनारस के एक संस्कृत महाविद्यालय को (1792 में) कुछ वित्तीय मदद दी थी। 1782 से 1785 तक गवर्नर जनरल रहे वॉरेन हेस्टिंग्स ने खुद भी संस्कृत और फारसी सीखी थी और कंपनी के कुछ अन्य अधिकारी भी प्राच्य विद्या के विद्वान थे। उनमें से एक, सर विलियम जोन्स ने बड़ी मात्रा में संस्कृत साहित्य का अनुवाद किया था और 1785 में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी।

किंतु मैकाले इस प्राच्यवाद का प्रबल विरोधी था, उसने कहा– "मेरा विश्वास है कि वर्तमान प्रणाली सच्चाई को आगे नहीं बढ़ाती है। बल्कि गलतियों की स्वाभाविक समाप्ति को और आगे तक ले जाती है। हमारा बोर्ड जनता के धन को बर्बाद करने के लिए; ऐसी किताबें छापने के लिए जिनका मूल्य उन कागजों के, जिन पर छपे हुए मूल्य से भी कम है जब वे कोरे थे। वे बेतुके इतिहास, बेतुकी तत्वमीमांसा, बेतुकी भौतिकी, बेतुकी ईश्वर–मीमांसा को क त्रिम प्रोत्साहन देने के लिए है।मुझे संस्कृत या अरबी का ज्ञान नहीं हैं पर मैंने उनके मूल्यांकन के लिए जो कर सकता था सो किया है।इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय का एक अकेला शेल्फ भी भारत और अरबी के संपूर्ण देशी साहित्य से कहीं ज्यादा मूल्यवान है।संस्कृत भाषा में लिखी

किताबों से एकत्र की गई ऐतिहासिक जानकारी इंग्लैंड के प्राथमिक विद्यालयों में प्रयुक्त सबसे कम महत्त्व की पुस्तकों संक्षेपणों में पाई जानेवाली जानकारी से भी कम मूल्यवान है।

इन कारणों से मैकाले को अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में निर्णय लेने में कोई हिचक नहीं थी, पर वह आम जनता के नहीं थे। "अपने सीमित स्रोतों के चलते आम लोगों को शिक्षित करना हमारे लिए असंभव है। वर्तमान में हमें एक ऐसा वर्ग तैयार करने का भरसक प्रयास करना चाहिए, जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच दुभाषिए का काम कर सकें, जिन पर हम शासन करते हैं; ऐसे लोगों का वर्ग जो रक्त और वर्ण से भारतीय किंतु रुचि, आचरण और मस्तिष्क से अंग्रेज हों। देश की स्थानीय बोलियों को परिष्क त करने और उन्हें पश्चिम से आयातित विज्ञान की शब्दावली से सम द्ध करने का काम हमें उस वर्ग पर छोड़ देना चाहिए और उसे जनसंख्या के बड़े वर्ग को जानकारी देने के लिए उपयुक्त उपकरणों से सम द्ध करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 32.2

सही पर निशान लगाइए :

1. ___________ तक फारसी मुगल वंश की प्रतीक बनी रही। (1831, 1833, 1835)
2. राजधानी, जैसे कि बंबई में ठीक वही नजर आता था, जिसका ___________ शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रांतीय नगर में अभाव था। (17वीं, 18वीं, 19वीं)
3. भारत का एक विशाल इतिहास लिखने के बाद जेम्स मिल ___________ में कंपनी का एक वरिष्ठ अधिकारी बन गया। (1719, 1819, 1919)
4. सर विलियम जोंस ने बड़ी मात्रा में संस्कृत साहित्य का अनुवाद किया था और ___________ में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी। (1785, 1835, 1885)

32.5 औपनिवेशिक तंत्र

1785 में कार्नवालिस ने कंपनी के ऐसे सेवकों का एक पेशेवर वर्ग तैयार कर लिया, जिनको भरपूर वेतन मिलता था, जिनके भारत में कोई व्यापारिक या उत्पादन संबंधी हित नहीं थे, जिनकी नियमित पदोन्नति की संभावनाएं थीं और जो पेंशन पाने के पात्र थे। सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय उनसे बहिष्क त थे। कार्नवालिस ने अंग्रेज न्यायाधीशों को नियुक्त किया और बंगाल के हर जिले में अंग्रेज अधिकारियों को राजस्व कलेक्टर और मजिस्ट्रेट बनाया। 1806 से कंपनी अपने युवा रंगरूटों को लंदन के पास हेलीबरी में प्रशिक्षण दिलाने लगी। नियुक्तियां अभी भी संरक्षण की प्रणाली के अनुसार की जाती थीं, पर 1833 के बाद कंपनी ने अपने नामांकित उम्मीदवारों में से प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा चयन करना शुरू कर दिया। 1853 के बाद चयन पूर्णतः योग्यता के आधार पर होने लगा और परीक्षा हर अंग्रेज उम्मीदवार के लिए

खोल दी गई। परीक्षा–प्रणाली चीनी मॉडल से प्रभावित थी, जो 2,000 सालों से अच्छी तरह चल रहा था और जिसका शास्त्रीय शिक्षण और साहित्यिक सक्षमता पर समान जोर था। भारतीय सिविल सेवा में (1) अत्यधिक वेतन मिलता था और (2) राजनीतिक सत्ता भी हासिल थी जिसे इंग्लैंड में कोई नौकरशाह प्राप्त नहीं कर सकता था।

1829 में पूरे ब्रिटिश भारत में छोटे–छोटे जिले स्थापित कर इस व्यवस्था को और सशक्त बना दिया गया, जिन्हें अकेले ब्रिटिश अधिकारी प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित कर सकते थे। ये अधिकारी अब राजस्व–कलेक्टर न्यायाधीश और पुलिस के मुखिया (जो मुगल प्रशासन के तहत अलग–अलग कार्य थे) के रूप में कार्य करते हुए पूर्णतः निरंकुश सत्ता का प्रयोग करने लगे। यह व्यवस्था बाद में पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में शाही प्रशासन की आधारशिला बन गई। चूँकि सिविल सेवा अंततः ब्रिटिश संसद के नियंत्रण के अधीन थी और भारत में ब्रिटिश समुदाय कड़ी पारस्परिक निगरानी के अधीन था, अतः प्रशासन वस्तुतः ईमानदार था।

चित्र 32.2 भाप का इंजन

कंपनी की सेना 20,000–30,000 ब्रिटिश अधिकारियों और सैनिकों के साथ भाड़े की स्थानीय सेना थी। एशिया में यह अब तक की सबसे आधुनिक और दक्ष सेना थी। 1857 के गदर के बाद ब्रिटिश टुकड़ी का आकार बढ़ाकर कुल संख्या का एक–तिहाई कर दिया गया और 1920 के दशक में बहुत थोड़े से भारतीयों की भर्ती किए जाने तक सारे अधिकारी अंग्रेज होते थे। आम तौर पर सेना की कुल संख्या लगभग 2,00,000 थी। यह सेना मुगल सेना से अत्यधिक छोटी, किंतु बेहतर प्रशिक्षण और उपकरणों से लैस थी और रेलवे नेटवर्क (जो अंशतः सैन्य कारणों से बनाया गया था) ने उसे बेहतर गतिशीलता, बेहतर सुविधाएँ और आवश्यक सूचना प्रदान की।

प्रशासन की उच्च श्रेणियां 1920 के दशक तक लगभग ब्रिटिश बनी रहीं, जब तक कि भारतीय सिविल सेवा परीक्षाएं इंग्लैंड के साथ–साथ भारत में भी नहीं होने लगीं। इसके अलावा, अन्य नौकरशाहियों के संपूर्ण पदानुक्रम में उच्चतर श्रेणियां ब्रिटिश ही थीं, जैसे कि राजस्व, न्याय, पुलिस, शिक्षा, चिकित्सा, लोक–निर्माण, इंजीनियरी, डाक और रेल सेवाओं के साथ–साथ प्रांतीय सिविल सेवाएं। इस प्रकार भारत ने ब्रिटिश मध्य और उच्चतर वर्गों के एक बड़े हिस्से को (खास कर स्कॉटलैंड और आयरलैंड के अपने बाह्य सदस्यों को) अत्यधिक वेतन वाले कॅरियर प्रदान किए।

1820 के दशक से 1850 के दशक तक ब्रिटिशों ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं को बदलने और भारत का पश्चिमीकरण करने की प्रबल लालसा दिखाई। उन्होंने शिशु–हत्या और विधवाओं को जलाने की प्रथा (सती) को मिटा दिया। उन्होंने दास–प्रथा का उन्मूलन कर दिया और राजमार्गों से डकैतों को उखाड़ फेंका। उन्होंने विधवा–विवाह को वैध बना दिया और धर्म–परिवर्तन कर ईसाई बने हिंदुओं को संयुक्त परिवार की संपत्ति में अपने हिस्से पर दावा करने की अनुमति दे दी। उन्होंने ब्रिटिश कानून पर आधारित दंड–संहिता लागू की (संहिता असल में 1861 में लागू हुई), जिसने समानता के कुछ विचार लोगों के मन में बिठाने में सहायता की। नए कानून के तहत ब्राह्मण और शूद्र समान अपराध के लिए समान दंड के भागी थे। इस प्रकार कानून का राज और कानून के सामने सबकी समानता अब नए मानदंड थे।

1857 तक इस विचार को मानना संभव था कि अंग्रेज धीरे–धीरे परंपरागत भारतीय समाज को नष्ट कर देंगे और देश का पश्चिमीकरण कर देंगे। किंतु पश्चिमीकरण की अतिसक्रियतावादी नीतियों और देशी राज्यों पर कब्जा कर ब्रिटिश राज का विस्तार करने की कोशिशों से 1857 के गदर में हिंदू और मुस्लिम दोनों संप्रदायों के लोगों के बागी बन जाने पर उनका कोई नामलेवा नहीं बचा। हालांकि उसी समय जीते गए सिखों सहित निष्ठावान भारतीय सैन्य दलों की भारी मदद से गदर का सफलतापूर्वक दमन कर दिया गया, किंतु भारतीय संस्थाओं और समाज के प्रति ब्रिटिश नीति कहीं अधिक रूढ़िवादी हो गई। ताज ने सीधी जिम्मेदारी ले ली और ईस्ट इंडिया कंपनी को भंग कर दिया गया। भारतीय सिविल सेवा ने ईस्ट इंडिया कंपनी के मुकाबले नए विचारों वाले कम लोगों को आकर्षित किया और लंदन द्वारा उस पर कड़ा नियंत्रण रखा जाने लगा।

ब्रिटिशों ने बाकी देशी राजकुमारों के साथ गठजोड़ कर लिया और नए क्षेत्रों पर कब्जा करना बंद कर दिया। उनके शासन के अंत तक लगभग एक–तिहाई भारतीय जनसंख्या अर्ध–स्वायत्त देशी राज्यों के रूप में बनी रही। उनके यहाँ आधिकारिक ब्रिटिश रेजिडेंट्स होने के बावजूद वे आंतरिक नीति में काफी आजाद थे। पश्चिमीकरण के प्रयास में एक गतिरोध आ गया। जो शिक्षा–प्रणाली यहाँ विकसित हुई, वह ब्रिटेन की शिक्षा–प्रणाली का धुंधला प्रतिबिंब थी। 1857 में कोलकात्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) और बंबई (मुंबई) में तीन विश्वविद्यालय खोले गए, पर वे केवल परीक्षा लेने वाले निकाय थे और वहां कोई पढ़ाई नहीं होती थी। उच्च शिक्षा संबद्ध महाविद्यालयों में दी जाती थी, जो दो–वर्षीय बीए पाठ्यक्रम चलाते थे जिनमें रटकर सीखने और परीक्षा देने पर जोर रहता था। पढ़ाई बीच में ही छोड़ जाने वालों का अनुपात हमेशा ऊँचा रहता था। विश्लेषण क्षमता या स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। उन्होंने ऐसे स्नातकों का समूह तैयार किया जो अंग्रेजी की अधूरी जानकारी रखते थे किंतु इतने पश्चिमीक त हो गए थे कि अपनी स्वयं की संस्क ति से कट गए थे। 1920 के दशक तक भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षण–सुविधाएँ प्रदान नहीं करते थे और उसके बाद भी केवल एम ए के विद्यार्थियों को ही शिक्षा देते थे। इसके अलावा, भारतीय शिक्षा मुख्यतः साक्षरता के स्वरूप वाली थी, जिसमें तकनीकी प्रशिक्षण का प्रावधान यूरोपीय देशों से कम था। लड़कियों की शिक्षा को पूरी उन्नीसवीं सदी के दौरान लगभग पूरी तरह उपेक्षित रखा गया। उच्च शिक्षा अंग्रेजी में थी, इसलिए न तो पश्चिमी साहित्य के स्थानीय भाषाओं में अनुवाद का कोई आधिकारिक

प्रयास हुआ और न ही भारतीय लिपियों का कोई मानकीकरण ही था जिनकी विविधता शिक्षित भारतीयों के बीच बहुभाषावाद में एक बड़ी बाधा थी।

आपकी टिप्पणियाँ

प्राथमिक शिक्षा को सरकारी दायित्व के रूप में गंभीरता से नहीं लिया गया और मुख्यतः कमजोर स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा ही उसका आर्थिक पोषण किया गया। परिणामस्वरूप जनसंख्या के एक बड़े हिस्से की शिक्षा तक कोई पहुंच नहीं बनी और 1947 में स्वतंत्रता मिलने तक 88 प्रतिशत लोग अशिक्षित थे। 1930 के दशक से इसकी प्रगति तेज हुई, लेकिन स्वतंत्रता–प्राप्ति के समय बच्चों का पांचवां हिस्सा ही प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहा था। सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने, धार्मिक अंधविश्वासों को मिटाने, उत्पादकता बढ़ाने और स्त्रियों की स्थिति सुधारने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती थी। इसके बदले उसका प्रयोग एक छोटे से अभिजात वर्ग को ब्रिटिशों की नकल करने और थोड़े बड़े समूह को सरकारी लिपिक बनाने में किया गया।

32.6 औपनिवेशिक राज्य के अंतर्गत बदलाव

ब्रिटिशों ने जो मुख्य बदलाव भारतीय समाज में किए, वे सब उच्च वर्ग पर किए। उन्होंने बेकार कुलीन नेताओं को व्यावहारिक तकनीकों द्वारा नौकरशाही–सैनिक स्थापना से बदल दिया जो कानून–व्यवस्था बनाए रखने में बहुत दक्ष थी। उच्च सरकारी दक्षता से राजकोषीय बोझ में भारी कमी आ गई और राष्ट्रीय उत्पाद का एक सबसे बड़ा हिस्सा जमींदारों, पूंजीपतियों और नए प्रोफेशनल वर्गों के लिए उपलब्ध हो गया। इस उच्च वर्ग की कुछ आय ब्रिटेन को भेजी जाती थी, पर अधिकांश भारत में ही खर्च की जाती थी। किंतु उपभोग का तरीका बदल गया, क्योंकि नया उच्च वर्ग अब हरम और महल नहीं रखता था और न ही महीन मलमल और सुसज्जित तलवारें धारण करता था। इसके कारण परंपरागत दस्तकारी के क्षेत्र में कुछ कष्टदायक परिणाम हुए। सरकार ने खुद रेलवे और सिंचाई में निवेश किया, जिसके कारण क षि और उद्योग दोनों के उत्पादन में व द्धि हुई। नए कुलीन वर्ग ने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी विद्यालयों के प्रयोग के साथ एक नई जीवन–शैली स्थापित की। उनके लिए अलग उप नगरों और निवास–स्थानों वाली नई शहरी और कस्बाई सुविधाएं स जित की गई। वकीलों, डॉक्टरों, शिक्षकों, पत्रकारों और व्यवसायियों के नए पेशेवर कुलीन वर्ग ने उनकी आदतों की नकल की। इस समूह के अंतर्गत पुराने जातिगत अवरोध ढीले पड़े और सामाजिक गतिशीलता बढ़ी। जहाँ तक आम जनसंख्या का संबंध है, औपनिवेशिक राज में उसके लिए ज्यादा बदलाव नहीं हुए। ब्रिटिशों के शैक्षिक प्रयास बहुत सीमित थे। ग्रामीण समाज, जाति–प्रथा अछूतों की स्थिति, संयुक्त परिवार प्रणाली या कृषि की उत्पादन–तकनीकों में कोई बड़े बदलाव नहीं हुए। कुल उत्पादन और जनसंख्या बड़ी मात्रा में बढ़े, पर प्रति व्यक्ति आय में बहुत कम या नगण्य व द्धि हुई।

पाठगत प्रश्न 32.3

रिक्त स्थानों भरिए :

1. सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय उनसे ________ थे।

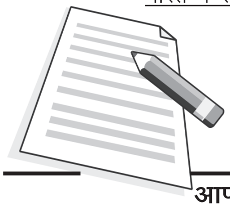

आपकी टिप्पणियाँ

2. चूंकि सिविल सेवा अंततः ब्रिटिश __________ के नियंत्रण के अधीन थी और भारत में ब्रिटिश समुदाय कड़ी पारस्परिक निगरानी के अधीन था, अतः प्रशासन __________ ईमानदार था।
3. ब्रिटिश सेना मुगल सेना से अत्यधिक __________ किंतु बेहतर प्रशिक्षण और __________ लैस थी।
4. __________ ने सीधी जिम्मेदारी ले ली और ईस्ट इंडिया कंपनी को __________ कर दिया गया।

ब्रिटिश राज्य ने अपना अलग लोकाचार विकसित किया। ब्रिटिशों ने निचली (देशी) जातियों में विवाह या खानपान नहीं किया। जीतों और गठजोड़ों के जरिए ही नहीं, बल्कि नई संस्थाओं के विकास के जरिए भी राज्य को कायम रखा गया, जिन्होंने प्रतीकात्मक ढंग से साहबों को देशी लोगों से अलग किया। छोटा आंग्ल–भारतीय क्रिओल वर्ग भारतीय अथवा स्थानीय ब्रिटिश समाज में एकीकत होने में असमर्थ होने के कारण परित्यक्त था। अंग्रेज छावनियों या सिविल लाइंस कहलाने वाले विशेष उपनगरों में स्थित अपने क्लबों और बंगलों तक सीमित रहते थे। उन्होंने मुगलों की सरकारी शानोशौकत, बड़े निवास–स्थानों और बड़ी संख्या में नौकरों की परंपरा कायम रखी। अपनी शास्त्रीय शिक्षा और व्यवसाय की अवहेलना के साथ कुलीन वर्ग कानून–व्यवस्था स्थापित करने और 'बर्बर' लोगों को राज की सीमा से दूर रखने में खुश था। स्वयं को लोकप्रिय नहीं बल्कि अच्छी सरकार देने वाले समझते हुए उन्होंने स्व–न्यायसंगत अक्खड़पन का अपना एक अलग प्रकार विकसित किया। उनके लिए 'ब्रिटिश' शब्द भौगोलिक संबद्धता खो चुका था और भारतीय उपनिवेश पर राज करने के लिए नैतिक औचित्य का उपनाम बन गया था।

आपने क्या सीखा

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। ब्रिटिशों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से भारत में एक क्षेत्रीय साम्राज्य स्थापित करने के प्रयास किए। औपनिवेशिक राज्य का अर्थ है किसी देश की प्रभुसत्ता ग्रहण करना। ब्रिटिशों ने भारत में अपने औपनिवेशिक शासन को इस बारे में अपने विचारों के अनुसार समेकित किया कि औपनिवेशिक राज्य कैसा हो सकता है। जैसा कि एक आधुनिक राज्य में होता है, औपनिवेशिक सरकार के पास सेना का एकाधिकार, एक केंन्द्रीक त प्रशासन और स्पष्ट निर्धारित क्षेत्रीय सीमाएँ थीं। 19वीं शताब्दी के दौरान एक ब्रिटिश राजसी या शाही विचारधारा उभरी, जिसमें विश्व के सबसे धनी और प्रगतिशील राष्ट्र के तौर पर इंग्लैंड का यह कर्त्तव्य था कि शेष विश्व को उन्नति करने और सुधरने में उसकी मदद करे। शाही सरकार की मुख्य जिम्मेदारियां थीं भूमि–राजस्व की वसूली और कानूनी प्रशासन का कार्यान्वयन।

बल–प्रयोग द्वारा अधीनता उपलब्ध होते ही राज्य की प्रथाओं को समस्त अधीनस्थों के लिए द ष्टिगोचर बनाया जाना आवश्यक था। औपनिवेशिक नियंत्रण के प्रारंभिक चरण के दौरान देशी नागरिक प्रशासन को बनाए रखा गया।

1785 में कार्नवालिस ने कंपनी के कर्मचारियों का एक पेशेवर संवर्ग तैयार कर लिया। सभी उच्चस्तरीय पद ब्रिटिशों के लिए आरक्षित थे और भारतीय बहिष्क त कर दिए गए थे। कंपनी की सेना 20,000–30,000 ब्रिटिश अधिकारियों और सैनिकों के साथ भाड़े की स्थानीय सेना थी।

प्रशासन की उच्च श्रेणियां 1920 के दशक तक लगभग ब्रिटिश बनी रहीं, जब तक कि भारतीय सिविल सेवा परीक्षाएं इंग्लैंड के साथ–साथ भारत में भी नहीं होने लगीं। ब्रिटिशों ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं को बदलने और भारत का पश्चिमीकरण करने की प्रबल लालसा दिखाई। उन्होंने शिशु–हत्या और विधवाओं को जलाने की प्रथा (सती) को मिटा दिया, विधवा–विवाह को वैध बना दिया और धर्म–परिवर्तन कर ईसाई बने हिंदुओं को संयुक्त परिवार की संपत्ति में अपने हिस्से पर दावा करने की अनुमति दे दी। इसके अलावा 1857 में कोलकात्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) और बंबई (मुंबई) में तीन विश्वविद्यालय खोले गए।

अंग्रेज मुख्यतः छावनियाँ या सिविल लाइंस कहलाने वाले विशेष उपनगरों में स्थित अपने क्लबों और बंगलों तक सीमित रहते थे। ग्रामीण समाज, जाति–प्रथा, अछूतों की स्थिति, संयुक्त परिवार प्रणाली या कृषि की उत्पादन–तकनीकों में कोई बड़े बदलाव नहीं हुए।

पाठांत प्रश्न

1. औपनिवेशिक राज्य के अर्थ और स्वरूप का वर्णन कीजिए।
2. उपनिवेशवाद की विचारधारा क्या थी और सिद्धांतकार कौन थे?
3. औपनिवेशिक उपकरणों पर प्रकाश डालिए।
4. औपनिवेशिक राज्य के अंतर्गत आए बदलावों का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

1. अठारहवीं
2. 1813
3. औद्योगिक
4. निर्मित

32.2

1. 1835
2. 19वीं

3. 1819
4. 1785

32.3

1. बहिष्क त
2. संसद, ईमानदार
3. छोटी, उपकरणों
4. ताज भंग

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखे अनुच्छेद 32.1
2. देखे अनुच्छेद 32.4
3. देखे अनुच्छेद 32.5
4. देखे अनुच्छेद 32.6